

سُورَةُ الْحُجُرَاتِ

Surah 49 — Al-Hujuraat (The Inner Apartments) · Medinan · 18 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تُقَدِّمُوا ۚ بَيْنَ يَدَيِ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ ۚ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों खुदा और उसके रसूल के सामने किसी बात में आगे न बढ़ जाया करो और खुदा से डरते रहो बेशक खुदा बड़ा सुनने वाला वाकिफ़कार है

2

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَرْفَعُوا ۚ أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا ۚ لَهُ ۚ
بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَلُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۚ

ऐ ईमानदारों (बोलने में) अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊँची न किया करो और जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से ज़ोर (ज़ोर) से बोला करते हो उनके रूबरू ज़ोर से न बोला करो (ऐसा न हो कि) तुम्हारा किया कराया सब अकारत हो जाए और तुमको ख़बर भी न हो

3

إِنَّ الَّذِينَ يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِندَ رَسُولِ اللَّهِ أُو۟لَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ
لِلتَّقْوَى ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

बेशक जो लोग रसूल ख़ुदा के सामने अपनी आवाज़ें धीमी कर लिया करते हैं यही लोग हैं जिनके दिलों को खुदा ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है उनके लिए (आख़िरत में) बख़्शिश और बड़ा अज़्र है

4

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنَ الْهُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۚ

(ऐ रसूल) जो लोग तुमको हुज्रों के बाहर से आवाज़ देते हैं उनमें के अक्सर बे अक़ल हैं

5

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا ۖ حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا ۖ لَهُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۖ رَّحِيمٌ ۖ

और अगर ये लोग इतना ताम्मुल करते कि तुम खुद निकल कर उनके पास आ जाते (तब बात करते) तो ये उनके लिए बेहतर था और खुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

6

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ ۖ بِنَبَأٍ ۖ فَتَبَيَّنُوا ۖ أَن تُصِيبُوا ۖ قَوْمًا ۖ يَآئِيهَا ٱللَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ فَتُصَبِّحُوا ۖ عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ نَادِمِينَ ۖ

ऐ ईमानदारों अगर कोई बदकिरदार तुम्हारे पास कोई खबर लेकर आए तो खूब तहकीक़ कर लिया करो (ऐसा न हो) कि तुम किसी क़ौम को नादानि से नुक़सान पहुँचाओ फिर अपने किए पर नादिम हो

7

وَأَعْلَمُوا ۖ أَن فِىكُمْ رَسُولَ ٱللَّهِ ۖ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِى كَثِيرٍ ۖ مِّنَ ٱلْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ ٱللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ ٱلْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ ۖ فِى قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ ٱلْكُفْرَ وَٱلْفُسُوقَ وَٱلْعِصْيَانَ ۖ أُو۟لَٰئِكَ هُمُ ٱلرُّشِدُونَ ۖ

और जान रखो कि तुम में खुदा के पैग़म्बर (मौजूद) हैं बहुत सी बातें ऐसी हैं कि अगर रसूल उनमें तुम्हारा कहा मान लिया करें तो (उलटे) तुम ही मुश्किल में पड़ जाओ लेकिन खुदा ने तुम्हें ईमान की मोहब्बत दे दी है और उसको तुम्हारे दिलों में उमदा कर दिखाया है और कुफ़्र और बदकारी और नाफ़रमानी से तुमको बेज़ार कर दिया है यही लोग खुदा के फ़ज़ल व एहसान से राहे हिदायत पर हैं

8

فَضْلًا ۖ مِّنَ ٱللَّهِ وَنِعْمَةً ۖ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۖ حَكِيمٌ ۖ

और खुदा तो बड़ा वाक्किफ़कार और हिकमत वाला है

وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا ۖ فَأَصْلَحُوا ۚ بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْ ۙ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَتِلُوا ۚ الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلَحُوا ۚ بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۚ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ

और अगर मोमिनीन में से दो फिरके आपस में लड़ पड़े तो उन दोनों में सुलह करा दो फिर अगर उनमें से एक (फ़रीक़) दूसरे पर ज्यादाती करे तो जो (फिरक़ा) ज्यादाती करे तुम (भी) उससे लड़ो यहाँ तक वह खुदा के हुक्म की तरफ रूझू करे फिर जब रूझू करे तो फरीकैन में मसावात के साथ सुलह करा दो और इन्साफ़ से काम लो बेशक खुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ ۚ فَأَصْلَحُوا ۚ بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهُ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

मोमिनीन तो आपस में बस भाई भाई हैं तो अपने दो भाईयों में मेल जोल करा दिया करो और खुदा से डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ ۚ مِنْ قَوْمٍ ءَعَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا ۚ خَيْرًا ۚ مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءً ۚ مِنْ نِسَاءٍ ءَعَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا ۚ مِنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوا ۚ أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا ۚ بِالْأَلْقَابِ ۚ بِئْسَ الْاِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَتُبْ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ

ऐ ईमानदारों (तुम किसी क़ौम का) कोई मर्द (दूसरी क़ौम के मर्दों की हँसी न उड़ाये मुमकिन है कि वह लोग (खुदा के नज़दीक) उनसे अच्छे हों और न औरते औरतों से (तमसखुर करें) क्या अजब है कि वह उनसे अच्छी हों और तुम आपस में एक दूसरे को मिलने न दो न एक दूसरे का बुरा नाम धरो ईमान लाने के बाद बदकारी (का) नाम ही बुरा है और जो लोग बाज़ न आएँ तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اجْتَنِبُوا ۚ كَثِيرًا ۚ مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۚ ۚ وَلَا تَجَسَّسُوا ۚ وَلَا يَغْتَبَ بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا ۚ ۚ فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों बहुत से गुमान (बद) से बचे रहो क्यों कि बाज़ बदगुमानी गुनाह हैं और आपस में एक दूसरे के हाल की टोह में न रहा करो और न तुममें से एक दूसरे की ग़ीबत करे क्या तुममें से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोشت खाए तो तुम उससे (ज़रूर) नफरत करोगे और खुदा से डरो, बेशक खुदा बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَكُمْ مِنْ ذَكَرٍ ۖ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَكُمْ شُعُوبًا ۖ وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا ۚ ۝۱
 إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝۲

लोगों हमने तो तुम सबको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और हम ही ने तुम्हारे कबीले और बिरादरियाँ बनायीं ताकि एक दूसरे की शिनाख्त करे इसमें शक नहीं कि खुदा के नज़दीक तुम सबमें बड़ा इज्जतदार वही है जो बड़ा परहेज़गार हो बेशक खुदा बड़ा वाकिफ़कार खबरदार है

۝۳ قَالَتِ الْأَعْرَابُ ءَامَنَّا ۚ قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا ۚ وَلَكِنْ قُولُوا ۚ أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
 الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَإِنْ تُطِيعُوا ۚ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ
 اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝۴

अरब के देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए (ऐ रसूल) तुम कह दो कि तुम ईमान नहीं लाए बल्कि (यूँ) कह दो कि इस्लाम लाए हालाँकि ईमान का अभी तक तुम्हारे दिल में गुज़र हुआ ही नहीं और अगर तुम खुदा की और उसके रसूल की फरमाबरदारी करोगे तो खुदा तुम्हारे आमाल में से कुछ कम नहीं करेगा - बेशक खुदा बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ
 وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ۝۵

(सच्चे मोमिन) तो बस वही हैं जो खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने उसमें किसी तरह का शक शुबह न किया और अपने माल से और अपनी जानों से खुदा की राह में जेहाद किया यही लोग (दावाए ईमान में) सच्चे हैं

قُلْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ
 شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝۶

(ऐ रसूल इनसे) पूछो तो कि क्या तुम खुदा को अपनी दीदारी जताते हो और खुदा तो जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) जानता है और खुदा हर चीज़ से खबरदार है

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۗ قُلْ لَا تَمُنُّوا عَلَيَّ إِسْلَمَكُم ۗ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

(ऐ रसूल) तुम पर ये लोग (इसलाम लाने का) एहसान जताते हैं तुम (साफ़) कह दो कि तुम अपने इसलाम का मुझ पर एहसान न जताओ (बल्कि) अगर तुम (दावाए ईमान में) सच्चे हो तो समझो कि, खुदा ने तुम पर एहसान किया कि उसने तुमको ईमान का रास्ता दिखाया

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بَصِيرٌ ۚ بِمَا تَعْمَلُونَ

बेशक खुदा तो सारे आसमानों और ज़मीन की छिपी हुई बातों को जानता है और जो तुम करते हो खुदा उसे देख रहा है